International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-08-2023, Accepted: 07-09-2023, Published: 22-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 27-29

मूल्य–संक्रमण और सुषम बेदी की कहानी 'चिड़िया और चील'

आशीष कुमार तिवारी
शोधार्थी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हिंदी प्रवासी साहित्य लेखन में सांस्कृतिक संक्रमण की समस्याएं उभरकर आती हैं। भारतीय मूल के परिवारों में अपने सांस्कृतिक परिवेश के प्रति मोह और नई पीढ़ी के बीच पश्चिमी मूल्यों के प्रति आकर्षण के कारण परिवार में कलह और अशान्ति का माहौल विसंगति को उभारता है। इस आलेख में इन्हीं सांस्कृतिक टकरावों और मूल्यगत चुनौतियों का शोधपरक विश्लेषण का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः भारतीय संस्कृति, जीवनमूल्य, मूल्य–संक्रमण, पारिवारिक विघटन, पीढ़ीगत टकराव।

प्रवासी हिंदी साहित्य के रचनात्मक सृजन ने हिंदी साहित्य के फलक को विस्तार दिया है। हिंदी साहित्य में इस नवीन विधा के आगमन से विदेशों में रह रहे भारतीयों के तमाम परिवेशगत और संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न संघर्ष, पीड़ा, क्षोभ और दुःख से रु–ब–रु होने का बड़ा ही उपयुक्त साधन प्राप्त हुआ है। अपने देश का आमजन जब किसी व्यक्ति या परिवार के विदेशों में बस जाने की खबर सुनता है, तो उनके बीच मात्र उस व्यक्ति या परिवार के सुख–सुविधापूर्ण जीवन–शैली का दृश्य ही चर्चा और जानकारी का विषय होता है, परन्तु विदेशों में प्रवास के पश्चात उनके जीवन में तमाम नए बदलाव घटित होने लगते हैं, जिनसे प्रवासी परिवार तमाम सुख–सुविधाओं के मौजूद होने के बावजूद भी संघर्षरत रहता है।

प्रवास के दौरान सबसे पहले घटित होने वाले तत्वों में संस्कृति का संघर्ष बड़ी चुनौती लेकर समक्ष उपस्थित होता है। परिवेशगत बदलाव के चलते प्रवासी व्यक्ति के समक्ष यह बड़ी चुनौती उत्पन्न हो जाती है कि वह इस परिवर्तित सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी संस्कृति की रक्षा किन साधनों द्वारा कर पायेगा, क्योंकि हमारी संस्कृति हमारे देशगत वातावरण में ही पोषित होती है, जो भौगोलिक परिवर्तन के पश्चात आवश्यक साधनों के अभाव में दम तोड़ती जाती है।

हमारी संस्कृति हमारे मूल्यों की धरोहर तथा पोषक है। जब संस्कृतियों की टकराहट होती है,जब उनमें घाल–मेल होना प्रारम्भ होता है तब मूल्यों में बदलाव आने शुरू हो जाते हैं। सांस्कृतिक परिवर्तन से हमारे मूल्य खतरे के निशान पर जा खड़े होते हैं। जहां उनकी रक्षा के लिए साहित्यकार और कलाकार खड़े होते हैं। वे उन मूल्यों की रक्षा के लिए उपयुक्त वातावरण का सृजन करने का रचनात्मक प्रयास करते हैं। इस सन्दर्भ में प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का योगदान शिरोधार्य है जिन्होंने विदेशी–भूमि पर अपने अस्तित्व की रक्षा में संलग्न उन तमाम लोगों के संघर्ष को साहित्य का विषय बनाया।

अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अध्यापनरत और लगभग चार दशकों से प्रवासी जीवन का यथार्थ झेलती अमेरिकी प्रवासी हिंदी कथाकार सुषम बेदी का कथा साहित्य भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच तनाव झेलते भारतवंशियों की जीवनगाथा की अभिव्यक्ति का साहित्य है। भारतीय मूल के नागरिक विदेशों में शिक्षा, शौक या रोजगार की ललक में जा बसते हैं। विकसित देशों की चमक–धमक और जीवन–शैली से प्रभावित होकर वे नई ज़मीन पर कदम रखते हैं, परन्तु खुद को उस देश की संस्कृति तथा परिवेश के अनुकूल ढ़ालना उनकी सबसे कठिन समस्या है, जहाँ वे अपनी परम्पराओं तथा संस्कृति को छोड़ नहीं पाते और विदेशी संस्कृति को पूरी तरह अपना भी नहीं पाते। फलस्वरूप उस परिवेश में वे अजनबी ही बने रह जाते हैं। सुषम जी की कहानी 'चिड़िया और चील' प्रवासी भारतीयों की दो संस्कृतियों के बीच जूझ रहे जीवन में अपने अस्तित्व को बचाये रखने की जद्दोजहद है, जिसमें कुछ रेत जैसा हाथ से सरकता जा रहा है। कहानी में मूल दो ही पात्र हैं दृ एक माँ और दूसरी उसकी बेटी जिसे कथा लेखिका ने चिड़िया सम्बोधन दिया है। इन दो पात्रों के अलावा जो तत्व कहानी में प्रभावी है वह है दृ परिवेश। प्रथम परिवेश,जिसमें चिड़िया के माता–पिता प्रवासी नागरिक के रूप में विदेशी धरती पर आते हैं और यह परिवेश तब तक चलता रहता है, जब तक चिड़िया वयस्क नहीं हो जाती। इस पूरे दौर में प्रवासी माता–पिता अपने कैरियर के शुरुआत के साथ–साथ अपनी बच्ची के भविष्य का रोडमैप बनाना शुरू करते हैं, जिसमें विदेशी मानसिकता की स्पष्ट झलक है। वे चाहते हैं कि उनकी बेटी उन्हीं की तरह डाक्टर बने। इसके लिए माँ उसे हर वक्त केवल पढ़ाई करने की सलाह देती रहती है। वो अपनी बेटी पर अपने सपने और अपनी पसन्द का कैरियर थोपना चाहती है, जिसके चलते बच्ची पर अनावश्यक बोझ–सा बनता चला जाता है और चिड़िया तमाम प्रतियोगिताओं में अपेक्षित स्थान नहीं बना पाती है जिससे उसमें निराशा और अपने अभिभावकों के प्रति आक्रोश का जन्म होता है। कहानी में यहीं से मूल्य–विपथन प्रारम्भ हो जाता है जो आगे चलकर संक्रमण की ओर बढ़ता जाता है।

दूसरा परिवेश, वहां से शुरू होता है जब चिड़िया को उसकी एक सहपाठी लड़की की मौत की खबर मिलती है, जिसे उसके माता–पिता ने पीट–पीटकर मार डाला था। इस घटना के बाद स्कूल में मिले बाल–हिंसा अपराध नियंत्रण संस्था के नम्बर ने चिड़िया को अपने माता–पिता से अपनी रक्षा के प्रति आश्वश्त किया। यह बाल–मनोविज्ञान का भी विषय है। इस घटना ने उस बच्ची के मस्तिष्क को हिला दिया था और उसे यह भी सूचित कर दिया था कि अगर आगे उससे भी कोई गलती होगी तो उसके माँ–बाप भी उसे मार डालेंगे। इसलिए वो उस संस्था का नम्बर भय से रट–रटकर याद करती रहती है। यहीं से शुरू होता है मूल्यों का संक्रमण। जब हमारे रिश्तों में विश्वास खत्म होने लगता है तभी हमारे सारे मूल्य तहस–नहस होने प्रारम्भ हो जाते हैं। माँ उस बच्ची को यह विश्वास दिलाना चाहती है कि वो उसका भला चाहती है और उनसे उसे कोई खतरा नहीं, परन्तु परिवेशगत अविश्वास उस पर इतना हावी हो चुका होता है कि वो माँ की गोद और उसकी ओर बढ़े हुए बाहों को एक नागपाश सरीखे महसूस करती है।

चिड़िया का उसकी माँ के नियंत्रण से बाहर निकल जाना एक त्रासदी का ही श्रृंखलागत विकास था। चिड़िया के माता–पिता ने अपने स्वार्थ तथा अपने कैरियर के लिये जिन सम्बंधों और देश को छोड़ा था उसी का अगला चरण था चिड़िया का पूरी तरह से विदेशी नागरिक हो जाना। जिस तरह से वे अपने माता–पिता को छोड़कर प्रवासी हुए ठीक उनके साथ यह हुआ कि उनकी बच्ची पूरी तरह से उनके संस्कारों से अजनबी होना चाहती थी। वे जिन बचे–खुचे संस्कृति बन्धन में अपनी बच्ची को लपेट कर प्रतिस्पर्धा में धकेल रहे थे उसमें वह उलझती जा रही थी और पूर्ण स्वतन्त्रता की ओर भाग जाना चाहती थी।

सुषम बेदी जी की यह कहानी युवा मन की विसंगतियों और ऊपापोह को व्यक्त करती है। आज का युवा चाहे वह जिस भी भूमि पर हो,उसे अपने कैरियर को संवारने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है। यह समस्या प्रवासी भारतीयों के बच्चों के साथ और भी कठिन है। अमेरिकी परिवेश में भारतीयों के साथ जिस तरह वर्तमान में नस्लभेद का व्यवहार किया जा रहा उससे यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी कि उन्हें शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा। भारतीय मूल के बच्चों को स्कूलों में दाखिले के वक्त भी और रोजगार में इंटरव्यू के दौरान भी अपने भारतीय मूल के होने का खामियाजा उठाना पड़ता है। प्रवासी भारतीयों के बच्चे अपने माता–पिता के संस्कारों तथा विदेशी परिवेश से प्राप्त संस्कारों के बीच झूलते हुये अपने लिए रास्ता तलाशते रहते हैं। उनके माता–पिता भले ही अपनी धरती छोड़कर प्रवासी हुए है पर वे अपने बच्चों को पूरी तरह विदेशी संस्कारों में नही ढलने देना चाहते। जिसके चलते रिश्तों में टकराहट व संघर्ष शुरू हो जाता है। वे बड़ों के सम्मान व आदर के बजाय अधिकारों की बातें ज्यादा करते हैं और उन्हें पाने के लिए अपने ही सम्बंधों को कानून के दायरे तक लेकर चले जाते हैं।

बीच–बीच में कहानी के भीतर भारतीय संस्कार की द्योतक के रूप में चिड़िया की मौसी का आगमन होता है जो उसकी माँ से चिड़िया की स्वतन्त्रता को सीमित करने की सलाह देती है और कहती है कि मेरी बेटी होती तो टाँगे तोड़ कर बैठा देती परन्तु चिड़िया की माँ यह जानती है कि ऐसा करना उचित भी नहीं और ऐसे परिवेश में सम्भव भी नहीं जहां अधिकारों की बातें उन्माद की अवस्था तक होती हैं। यहां यह भी देखने को मिलता है कि भारतीय परिवेश का अनुशासन यहां निष्क्रिय साबित हो रहा।

कहानी में माँ जहां एक ओर सफलता की होड़ में अपनी बच्ची को अनुकूल बनाना चाहती है वहीं संवेदनशील मन उसके बढ़ते पंखों की चाहत को देखकर भयभीत भी है। जब चिड़िया को उसके सम्बन्ध ही घातक लगने लगते हैं तब वह व्याकुल हो उठती है। वह भाग जाना चाहती है सारे नातों से। तभी उसे एक विदेशी सभ्यता व संस्कारों से युक्त एक साथी मिल जाता है जो उस चिड़िया को चील और बाज़ की चाल भरने के लिए उकसाता है। चूँकि चिड़िया खुद अपनी धरती और अपने घोंसले से असन्तुष्ट है इसलिए चील अपनी चाल में चिड़िया को फंसा पाने में सफल हो जाता है। चिड़िया का यह साथी कोई और नहीं बल्कि उसी विदेशी संस्कारों का दूत था जो चिड़िया को उसकी माँ के हाथों से छीन कर पूरी तरह निगल ले गया। चिड़िया पिंजरा छोड़कर चील के साथ चल पड़ी३३..चाल भरने या निवाला बनने३.यह किसी को नहीं पता।

इस तरह यह भारतीय परिवेश से आये एक परिवार में विदेशी परिवेश से संचालित एक लड़की की कथा है जिसकी व्यथा का कारण उसका भारतीय मूल का होना था। गर्म हवा में कब तक किसी चीज़ को ठंडा रखा जा सकता है। परिवेश के प्रभाव ने मूल्यों,सम्बंधों को ताक पर रख दिया। अब चिड़िया अपने परिवार से प्राप्त मूल्यों और परिवेश से प्राप्त मूल्यों के संक्रमण की दिशा में चल पड़ी। जिसमें पीड़ा है,घुटन है,अवसाद है।

सन्दर्भ सूची

1. 'चिड़िया और चील' दृ सुषम बेदी
2. (https:@@hindinest-com@kahani@02654-htm)
3. शोध दिशा(पत्रिका) दृ जुलाई–सितम्बर, 2010
4. प्रवासी भारतीयों का साहित्यिक उपनिवेशवाद दृ सुषम बेदी
5. (http:@@www-abhivyakti&hindi-org@snibandh@2009@pravasi-htm)
6. मनोज श्रीवास्तव का आलेख, अभिव्यक्ति ऑनलाइन मैगज़ीन
7. प्रवासी साहित्य: एक विकास यात्रा
8. (https:@@www-garbhanal-com@pravasi&literature&a&development&journey)
9. सुषम बेदी के कथा–साहित्य में प्रवासी जीवन की समस्याएं दृ मनीषखारी
10. (http:@@www-sahchar-com@2018@04@05@%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%B7%E0%A4%AE&%E0%A4%AC%E0%A5%87%E0%A4%A6%E0%A5%80&%E0%A4%95%E0%A5%87&%E0%A4%95%E0%A4%A5%E0%A4%BE&%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF&%E0%A4%AE@)